अकबर कालीन स्थापत्य कला का वर्णन

डॉ. के. के. पटेल
विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर
(छ.ग.)

अकबर के युग की इमारतें (1556–1605 ई.) (Architecture during Akbar's Period (1556–1605 A.D.)

अकबर का काल सम्मिश्रण और समन्वय का युग था । स्थापत्य कला के क्षेत्र में भी इसका प्रभाव स्पष्ट दिखायी पड़ता है। उसके समय में बनायी गयी इमारतों पर ईरानी व भारतीय तत्व स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं परन्तु इनमें प्रमुखता भारतीय तत्वों को ही प्राप्त है। वस्तुतः अकबर के काल की कला को इतिहासकारों ने राष्ट्रीय कला का नाम दिया है। अकबर के स्थापत्य कला के प्रति लगाव को स्पष्ट करते हुए उसके समकालीन लेखक **अबुल फजल** ने लिखा है : "सम्राट सुन्दर भवनों की योजना बनाता है और अपनी इन योजनाओं को पत्थर एवं मिट्टी का जामा पहनाता है। **पर्सी ब्राउन** की मान्यता है कि अकबर के काल में स्थापत्य–कला की जो शैली उन्नत हुई वह वस्तुतः हिन्दु–मुस्लिम शैलियों की संगम ही है।

हुमायूँ का मकबरा (Humanyun's Tomb) – मुगल स्थापत्य–कला की सर्वप्रथम सुन्दर कृति हुमायूँ का मकबरा है। यह दिल्ली में स्थित है। इसका निर्माण अकबर की सौतेली माँ हाजी बेगम की देखरेख में हुआ था। इस मकबरे का निर्माता प्रधान कारीगर ईरानी था और हुमायूँ की पत्नी ईरानी कला के आदर्शों से प्रभावित थी। यह मकबरा वास्तुकला की दृष्टि में सुन्दर कृति है। गुम्बद के साथ छतरियों का प्रयोग यहाँ पूर्णता को पहुँच गया था। इस मकबरे का गुम्बद भारत में अपनी प्रकार का पहला गुम्बद है। इतिहासकार इस गुम्बद की तुलना समरकन्द के तैमूरलंग और बीबी खानम के मकबरे से करते हैं।

आगरा का किला (Agra Fort) —– अकबर महान् द्वारा निर्मित विशाल इमारतों में आगरा का लाल किला सर्वाधिक प्रसिद्ध है। 1565 ई. में अकबर के शाही कारीगर कासिम खाँ के निरीक्षण में इसका निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ। इसमें लगभग चार हजार कारीगरों ने निरन्तर पन्द्रह वर्ष तक परिश्रम किया और इस पर 35 लाख रुपये व्यय हुए।

जहाँगीरी महल (Jahangiri Mahal) – आगरा के किले में अकबर द्वारा बनायी गयी शेष इमारतों में जहाँगीरी महल सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसका निर्माण बादशाह अकबर ने अपने उत्तराधिकारी शाहजादा सलीम (बाद में जहाँगीर) के निवास के लिए कराया था। डॉ. रामनाथ का मत है कि यह इमारत मूलतः अकबर का अपना रनिवास था परन्तु कालान्तर में जंहागीर ने इसके सम्मुख 1611 ई. में एक हौज बनवाया था जिसके कारण इसका नाम जहाँगीरी महल पड़ गया था। यह लगभग वर्गाकार इमारत है। इसके चारों कोनों पर चार छतरियाँ हैं। प्रवेश–द्वार नोकदार मेहराब का है। इसमें मुख्यतः लाल पत्थर का प्रयोग है परन्तु बाह्य भाग पर कुछ संगमरमर का भी उपयोग किया गया है। सम्पूर्ण भवन हिन्दू–शैली से प्रभावित है। "भवन में यत्र–तत्र हंस, हाथी, मोर, तोते और मगर की आकृतियाँ खुदी हुई हैं। कमल और श्रीवत्स के रूपक हैं, जिनके आधार पर **डॉ. रामनाथ** ने लिखा है कि यह महल हिन्दू मन्दिर के सदृश प्रतीत होता है और यह अकबरकालीन स्थापत्य–कला का वास्तविक अर्थों में परिचायक है।

अकबरी महल (Akbari Mahal) —– जहाँगीरी महल के समीप अकबरी महल था, जिसके अब कुछ अवशेष ही बाकी हैं। इस भवन का निर्माण अकबर के शासनकाल के प्रारंभिक वर्षों में हुआ था, अतः इसमें अलंकरण का अभाव है।

फतेहपुर सीकरी की प्रमुख इमारतें : (Chief Buildings of Fatehpur Sikri) **:**

(i) **दीवाने आम** (Diwan Aam) – यह ऊँची कुर्सी पर बनाया गया है। यह एक साधारण आयताकार कमरा है जिसमें खुदाई का अत्यधिक काम है। इसमें आगे की ओर बरामदा है

जिस पर लाल पत्थर के हालदार छज्जे हैं। यहाँ पर अकबर अपना आम दरबार किया करता था। इसके पास ही दफ्तर खाना है जिसके पीछे एक विस्तृत आँगन है जिसमें दीवाने खास, शाही कार्यालय और विश्रामकक्ष आदि हैं।

(ii) **दीवाने खास** (Diwane Khas) दीवाने खास एक छोटी–सी इमारत है इसकी निर्माण योजना फतेहपुर सीकरी के अन्य भवनों से अलग है। देखने में यह इमारत दो मंजिल की मालूम पड़ती है, परन्तु वास्तव में वह ऐसी नहीं है। यह एक वर्गाकार इमारत है। इसके कक्ष के मध्य में एक सुन्दर स्तम्भ गढ़ा हुआ है और इसके ऊपरी भाग पर छत्तीस जुड़े हुए फूलों की पंखूड़ियों की तरह के लहरियादार बेकेट हैं तथा इसके ऊपर गोल पत्थर का मंच–सा है। "केन्द्रीय मंच को पत्थर के पुल के विपरीत दिशाओं से निकालकर बालकंनियों को जोड़ते हैं जो ऊपरी भाग के चारों ओर स्थित है।

(iii) **पंचमहल** (Panch Mahal) –स्तम्भों पर आधारित यह एक पाँच मंजिल की इमारत है, जिसका उपयोग सभा अथवा उत्सव के समय किया जाता होगा। इसके खम्भों पर अत्यधिक सजावट देखने को मिलती है। प्रत्येक स्तम्भ विविध प्रकार का है। इस महल की पहली मंजिल एक विशाल हॉल के समान है जिसमें 48 खम्भे हैं और इस पर ही अन्य चार मंजिलें बनी हुई हैं। ऊपर की प्रत्येक मंजिल उत्तरोत्तर छोटी होती गयी है।

(iv) **शाहजादों का मकतब** (Maktabs of Princes) – पंचमहल के नीचे का भवन शाही बालक–बालिकाओं के मकतब के रूप में प्रयोग किया जाता था। यह भी स्तम्भों पर आधारित दो मंजिल का भवन है। हिन्दू–मन्दिरों के समान छोटे स्तम्भों का इसमें प्रयोग हुआ है। इसकी छत पटावदार है। यह इमारत अपने समय में सुन्दर रही होगी परन्तु अब इस पर किया गया खुदाई का कार्य धीरे–धीरे नष्ट होता जा रहा है।

(v) **तुर्की सुल्ताना की कोठी** (Turki Sultana's Kothi) — जनानखाने के प्रांगण में स्थित यह एक छोटी सी इमारत है जिसमें खुदाई का अत्यन्त आकर्षक कार्य है। इसे तुर्की सुल्ताना का महल कहा जाता है। यह एक मंजिल की इमारत है और इसके आगे स्तम्भों पर आधारित एक बरामदा है। आन्तरिक भाग में अत्यधिक सजावट है। पशु–पक्षियों की आकृतियों के साथ

अनेकानेक पेड़–पौधों और फल–फूलों की भी इसमें खुदाई की गयी है। कालान्तर में औरंगजेब ने अपनी धर्मान्धता के कारण पशु–पक्षियों की आकृतियों को नष्ट करा दिया था।

(vi) **खास महल** (Khas Mahal) – यह अकबर का व्यक्तिगत आवास गृह था। यह दो मंजिली इमारत है। इसके चारों कोनों पर छतरियाँ थीं। इसकी बाह्य दीवार सफेद है।

संगमरमर के जालीयुक्त पर्दों तथा लाल ग्रेनाइट के पत्थरों की बनी थी। परन्तु अब उसके अवशेष बाकी हैं। इसके दक्षिण की ओर अकबर का शयन कक्ष था। यह अत्यन्त सादे प्रकार की इमारत है। साथ ही लगा हुआ एक पुस्तकालय–कक्ष है तथा ऊपरी मंजिल में झरोखा–दर्शन है। "खास महल और तुर्की सुल्ताना की कोठी के सामने ही एक पत्थर का चौपड़ है जिसके बीच उठा हुआ एक चबूतरा है। इस चौपड़ को गुलाबजल से भर दिया जाता था और सम्राट तथा उसकी बेगमें ऊपर बैठकर सुगन्धित ठण्डी हवा का आनन्द लेते थे"।

(vii) **जोधाबाई का महल** (Jodhabai's Palace) – **पर्सी ब्राउन** का मत है कि यह महल फतेहपुरसीकरी में निर्मित इमारतों में सबसे अधिक विशाल है और इसमें तत्कालीन स्थापत्य–कला शैली का विकसित रूप दृष्टिगत होता है। यह एक आयताकार इमारत है। चारों ओर से 32 फुट ऊँची दीवार से घिरी इस इमारत का केवल एक ही प्रवेश–द्वार है। इमारत की निर्माण–शैली को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें हिन्दू–शैली की बहुतायत है। सम्पूर्ण महल देखने में मन्दिर के समान प्रतीत होता है। इसमें उभरे हुए कमल और श्रीवत्स हैं। **पर्सी ब्राउन** और **हैवेल** जैसे इतिहासकारों का मानना है कि इसके निर्माण का कार्य गुजरात के कलाकारों को सौंपा गया था। सम्भवतया इसीलिए इसमें हिन्दू–शैली की बहुतायत है। **डॉ. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव** ने लिखा है **:** "इसकी निर्माण–योजना एवं व्यवस्था में कोई कमी नहीं है तथा इसे मध्यकालीन मुगलों के शाही आवासगृह का एक सुन्दर नमूना माना जा सकता है।" महल की छतों में रंगीन टाइल्स लगाकर उनकी साज–सज्जा में वृद्धि की गयी है।

(viii) **मरियम की कोठी** (Kothi of Mariam) – जोधाबाई के महल के समीप स्थित यह इमारत

मरियम की कोठी के नाम से विख्यात है। बहुत–से लेखक इसे अकबर की ईसाई रानी का महल मानते हैं, जबकि डॉ. श्रीवास्तव इसे जहाँगीर की माता का महल लिखते हैं। इसे संगीन महल के नाम से भी जाना जाता है। इसके आन्तरिक भाग में अत्यन्त सुन्दर भित्ति–चित्र अंकित हैं, जिनमें युद्ध के दृश्य, शिकार खेलने, हाथियों के चित्र अत्यन्त प्रभावोत्पादक थे। इसमें हिन्दू देवी–देवताओं व परियों के चित्र भी थे जिनके सम्बन्ध में **लतीफ** ने लिखा है–: "मुसलमानों ने जोश में अनेक खुदी हुई आकृतियों एवं चित्रों को नष्ट कर दिया परन्तु उनके निशान अभी बाकी हैं। डॉ. श्रीवास्तव के अकबर के संरक्षण में विकसित मुगल चित्रकला के प्रारम्भिक नमूने थे। इनके चारों ओर सुन्दर अलंकृत स्तम्भों का बरामदा है जिसके छज्जे आगे की ओर बढ़े हुए हैं। भित्ति चित्रों के निर्माण में ईरानी शैली को अपनाया गया है। सम्पूर्ण इमारत चित्रकला के प्रति अकबर के प्रेम की परिचायक है और चित्र मन्दिर–से प्रतीत होते है।

(ix) **राजा बीरबल का महल** (Raja Birbal's Palace)– अकबर के दरबारी विदूषक और मित्र बीरबल का महल सीकरी के तीसरे सहन में स्थित है। यह अत्यधिक अलंकृत भवनों में से है। चार कक्षों की यह दो मंजिला इमारत है। पहली मंजिल में दो बरसातियाँ हैं और ऊपरी मंजिल के ऊपर चपटे गुम्बद हैं। इस महल में दोहरे गुम्बदों का प्रयोग किया गया है। **डॉ. श्रीवास्तव** का मत है कि "इस इमारत की मुख्य विशेषता इसकी खुदाई के काम की सुन्दरता और इसके अत्यधिक सजे हुए ब्रेकेट हैं।" इसके आन्तरिक भाग में शिल्पकला के सजीव उदाहरण देखने को मिलते हैं।

(x) **जामा मस्जिद** (Jama Masjid)– जामा मस्जिद अबुल फजल के निवास–स्थान के पीछे बनी हुई है। यह एक आयताकार भवन है। इसके सहन में शेख सलीम चिश्ती और उनके पौत्र इस्लामखाँ के मकबरे हैं। मस्जिद पर तीन गुम्बद हैं। मध्य–भाग का गुम्बद अन्य गुम्बदों की तुलना में बड़ा है। **डॉ. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव** ने इस मस्जिद के सम्बन्ध में लिखा है परन्तु इसकी सीकरी की जामा मस्जिद की योजना यद्यपि अरबी अथवा ईरानी नमूने की है बनावट भारतीय है। इसमें ईरानी इमारतों के अंगों को अपनाया तो गया है परन्तु उनकी पूर्ण रूप से नकल नहीं की गयी है। इस मस्जिद के खम्भे व छतें पूर्ण रूप से हिन्दू हैं इसका केन्द्रीय

गुम्बद चम्पानेर की जामा मस्जिद के गुम्बद से काफी मिलता–जुलता है। इसके सहन में कुछ छोटी–छोटी कोठरियाँ हैं जो मौलवियों और उनके शिष्यों के निवास के लिए बनवायी गयी थीं। अकबर के काल की सभी इमारतें रंगाई एवं खुदाई की दृष्टि से इस इमारत के सम्मुख फीकी पड़ जाती हैं। **पर्सी ब्राउन** ने लिखा है : "इस सुन्दर इमारत की सजावट की विभिन्नता का इसके अनुरूप वर्णन सम्भव नहीं है, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है जैसे कलाकारों ने किसी अत्यन्त सुन्दर हस्तलिखित ग्रन्थ के पृष्ठों को अपना नमूना मान लिया हो और उन्हें अपनी रेखाओं तथा रंगों में बुन कर दीवार के खाली स्थान पर सजावट के लिए भर दिया हो।"

(xi) **शेख सलीम चिश्ती का मकबरा** (Tomb of Sheikh Salim Chisti) – सफेद संगमरमर का बना हुआ यह मकबरा अत्यन्त आकर्षक है। सीकरी की अन्य सभी इमारतें लाल पत्थर की हैं परन्तु इसमें कहीं भी लाल पत्थर का प्रयोग नहीं है। पर्सी ब्राउन का कथन है कि आरम्भ में यह मकबरा भी लाल पत्थर का बनाया गया था। बाद में अकबर के उत्तराधिकारियों ने इसे वर्तमान रूप प्रदान किया है। इसकी निर्माण–योजना वर्गाकार है। कब्र–कक्ष का व्यास पाँच मीटर है और इसके ऊपर एक सुन्दर गुम्बद है। **डॉ. श्रीवास्तव** ने सलीम चिश्ती के मकबरे की स्थापत्य कला की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि "इस मकबरे की मुख्य विशेषताएँ इसके सजावटपूर्ण स्तम्भ और इसके चौड़े छज्जों को सहारा देने वाले आलम्बन (Struts) हैं। इसके स्तम्भों की आकृति अद्‌भुत है। इसके तीरे (Shafts) टेढ़े–मेढ़े सर्पिल हैं और उनके ऊपर के शिरोभाग चूने की लटकनी जैसे डिजाइनों से सुसज्जित हैं।" शेख सलीम चिश्ती के मकबरे में हिन्दू–कला के स्पष्ट अंगों को देखकर **वी. ए. स्मिथ** ने स्वीकार किया कि सम्पूर्ण इमारत में चार चाँद हिन्दुत्व का प्रभाव है। फर्श की डिजाइन एवं जालीदार पर्दे इमारत के सौन्दर्य में लगा देते हैं। मकबरे की कब्र पर लकड़ी की चाँदनी पर सीप का अत्यन्त सुन्दर जड़ाऊ काम है। **फर्ग्युसन** का मत है कि इमारत के विभिन्न अंग इस्लाम धर्म की बौद्धिकता एवं गम्भीरता की अपेक्षा मन्दिर निर्माणकर्ता की मुक्त कल्पना का अनुमान प्रस्तुत करते हैं।

(xii) **इस्लामखाँ का मकबरा** (Tomb of Islam Khan) – शेख सलीम चिश्ती के मकबरे के समीप उनके पौत्र इस्लामखाँ का मकबरा है जो लाल पत्थर का बना हुआ है। अकबर के

शासनकाल में वह एक मनसबदार था परन्तु जहाँगीर ने उसे पदोन्नत करके बंगाल का गवर्नर बना दिया था। 1613 ई. में उसकी मृत्यु के बाद उसे सीकरी में जामा मस्जिद के सहन में दफना दिया गया था। मकबरा यद्यपि अत्यन्त सुरुचिपूर्ण ढंग से बना हुआ है परन्तु आसपास की इमारतों के कारण कुछ दब सा गया है।

(xiii) **बुलन्द दरवाजा** (Buland Darwaja) – यह जामा मस्जिद के दक्षिण की दीवार में बना है। बुलन्द दरवाजा भारत का सबसे ऊँचा प्रवेश–द्वार है। जमीन की सतह से 176 फुट ऊँचे चबूतरे पर यह 134 फुट ऊँचा है अर्थात् जमीन की सतह से इसकी ऊँचाई 311 फुट है। अपनी अत्यधिक ऊँचाई के कारण यह समस्त इमारतों पर छाया हुआ प्रतीत होता है। अकबर ने अपनी दक्षिण–विजय अथवा बंगाल और गुजरात को विजय करने की स्मृति में इसका निर्माण कराया था। **डॉ. श्रीवास्तव** ने लिखा है कि ″बुलन्द दरवाजा स्वयं ही एक पूरी इमारत है, इसमें बड़े हॉल और कई छोटी–छोटी कोठरियाँ हैं जो आसपास में एक–दूसरे से मिली–जुली हैं। इनसे मस्जिद के भीतरी चौकोर सहन में पहुँचा जा सकता है। इस प्रवेश–द्वार का अग्रभाग ईरानी शैली का है, जबकि इसकी बनावट स्पष्ट रूप से भारतीय है। स्थापत्य–कला की दृष्टि से यह दरवाजा हिन्दू–मुस्लिम स्थापत्य कलाशैलियों का सुन्दर मिश्रण है। लाल पत्थर से बने इस दरवाजे पर संगमरमर की पच्चीकारी की गयी है जो अत्यन्त सुन्दर व सजीव है। **पर्सी ब्राउन** ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि "बुलन्द दरवाजा उस समय विशेष रूप एक महान एवं प्रभावोत्पादक निर्माण–कार्य प्रतीत होता है, जब उस पर जमीन से खड़े होकर दृष्टिपात किया जाये तब वह उत्तेजक तथा विस्मयकारक शक्ति का रूप मालूम पड़ता है; परन्तु इसका प्रभाव भारी अथवा कृत्रिम नहीं लगता।

(xiv) **शाही अस्तबल और अबुल फजल–गृह** (Royal Astabal and Home of Abul Fazl) –बीरबल के निवास स्थान से कुछ दूरी पर शाही अस्तबल है । इसके दोनों ओर मेहराबदार बरामदों में जानवरों को बाँधने के स्थान हैं। यहीं से एक छोटा द्वार जामा मस्जिद की ओर भी खुलता है। मस्जिद के पीछे साधारण प्रकार के दो आवास–गृह हैं, जो अबुल अजल और फैजी के निवास–स्थान थे। सजावटहीन इस साधारण इमारत में पुस्तकें रखने के लिए

बड़े–बड़े आले बने हुए है।

(xv) **हाथीपोल, सराय और हिरन मीनार** (Hathi Poll Sarai and Hiran Minar)—हाथीपोल का प्रवेश–द्वार काफी ऊँचा है। इसके दोनों ओर अठपहले बुर्ज हैं। इसके दोनों ओर ऊँची कुर्सी पर हाथियों की दो मूर्तियाँ थीं जिनकी सूँड़ आपस में गुंथी हुई थी। औरंगजेब ने अपनी धार्मिक संकीर्णता के कारण इसे नष्ट करा दिया।

संगीन बुर्ज के समीप सराय है जिसमें विदेशों से आने वाले यात्री विश्राम करते थे। सराय और हरम के मध्य जाली की एक पर्देदार गैलरी है, ताकि हरम की महिलाएँ यहाँ आकर विदेशी व्यापारियों द्वारा प्रदर्शित सामग्री को देख सकें ।

सराय से कुछ दूर झील के किनारे हिरन मीनार है। यह 90 फुट ऊँची है। इसके शीर्ष–भाग में एक गुम्बदयुक्त छतरी बनी है जो चारों ओर से खुली है। कुछ लोगों की मान्यता है कि इसे अकबर ने अपने एक प्रिय हाथी की कब्र के रूप में बनवाया था, जबकि दूसरा मत यह है कि यहाँ पर बैठकर अकबर हिरनों का शिकार किया करता था ।

(xvi) **कोषागार व चिकित्सालय** (Treasury and Hospital) — दीवाने खास के दूसरी ओर राजकीय कोषागार है। अत्यन्त साधारण इस इमारत में बड़े–बड़े आले हैं जो सम्भवतया धन को संग्रहीत करने के काम आते होंगे। दीवाने–खास के दाहिनी ओर एक चिकित्सालय के अवशेष हैं। इसका विस्तृत क्षेत्रफल इसकी विविधता का द्योतक है।

(xvii) **ज्योतिषी की बैठक** (Sitting Room of Astrologer) –ज्योतिषी की बैठक कोषागार के पश्चिम में है। यह चारों ओर से खुली हुई है तथा इस पर घनी खुदाई का कार्य है। **पर्सी ब्राउन** का मत है कि इसके निर्माण कार्य में अकबर ने अपनी सनक से काम लिया है, क्योंकि अत्यधिक सजावट ही इसका मुख्य दोष प्रतीत होता है।

फतेहपुरसीकरी के सम्बन्ध में **लेनपूल** का मत यह है कि "सम्पूर्ण भारत में इससे सुन्दर और शोकमय स्थान अन्यत्र नहीं है जितना यह निर्जन नगर जो एक नष्ट हो गये स्वप्न का मौन प्रमाण बनकर खड़ा है।" फर्ग्युसन जैसे कलामर्मज्ञों ने फतेहपुरसीकरी की प्रशंसा करते हुए

लिखा है कि "फतेहपुरसीकरी अपने महान् निर्माता की ऐसी प्रतिच्छाया है जैसी अन्यत्र उपलब्ध नहीं हो सकती। यह पाषाण का एक रोमांस है।"

फतेहपुरसीकरी के प्रांगण में बनी हुई इमारतें में मुख्य रूप से लाल है पत्थर का प्रयोग है परन्तु सजावट के लिए कहीं–कहीं पर संगमरमर का भी उपयोग किया गया है। लाल पत्थर हुई नगरी दुल्हन–सी प्रतीत होती है और इसे मुगल काल की इमारतों में ताजमहल के पश्चात् दूसरी श्रेणी की कलाकृति स्वीकार किया जाता है। यूरोपीय भ्रमणकर्ता **राल्फ फिंच** फतेहपुरसीकरी से अत्यन्त प्रभावित हुआ और उसने अपने संस्मरणों में यहाँ की समृद्धि, धनी आबादी एवं व्यापारिक केन्द्र होने की अत्यन्त प्रशंसा की है।

इतिहासकार **स्मिथ** ने लिखा है कि "फतेहपुरसीकरी के समान निर्माण कार्य न पहले कहीं हुआ है और न ही अब होगा। यह रोमांस का ऐसा प्रतिस्वरूप है जिसमें अकबर के प्रवृत्ति के सभी मनोभाव सुसज्जित हैं।"

अकबर काल की अन्य इमारतें (Other Buildings of Akbar's Period)– (1) लाहौर के किले के निर्माण का श्रेय अकबर को है। इसका निर्माण–कार्य आगरा के किले के साथ–साथ हुआ। **पर्सी ब्राउन** का कथन है कि "इस किले की निर्माण योजना आगरा के किले की तुलना में अधिक उत्तम है, क्योंकि यह आयताकार है और इसकी आन्तरिक व्यवस्था अच्छी तरह से सुनियोजित है। इसमें सजावट अधिक है। इसमें ब्रेकेटों पर खुदी हुई हाथियों और मोरों की आकृतियाँ इस बात की प्रतीक हैं कि यहाँ हिन्दू कारीगरों ने अपनी शैली का उन्मुक्त रूप से प्रयोग किया है।

(2) अकबर ने इलाहाबाद में 1583 ई. में एक किले का निर्माण कराया था जो अब अत्यन्त जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है। इसके भग्नावशेषों को देखकर कला–विशेषज्ञों ने इमारत को अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया है।

(3) 1581 ई. में अटक के किले को बनवाया गया था। सीमावर्ती प्रदेशों की सुरक्षा की दृष्टि से यह किला महत्वपूर्ण है परन्तु अब इसकी स्थिति खण्डहरों से अच्छी नहीं है।

उपर्युक्त इमारतों के अतिरिक्त फतेहपुरसीकरी और अन्यत्र स्थित निम्नलिखित अन्य इमारतें भी अकबर के स्थापत्य–कला के चाव की प्रतीक हैं— (i) इबादतखाना, (ii) दफ्तर खाना, (iii) हकीम का महल, (iv) नौबतखाना, (v) बारहदरी, (vi) हमाम, (vii) लंगरखान (vii) कबूतरखाना, (ix) मस्जिद शाहकुली, (x) राजा टोडरमल का महल, (xi) अजमेर के ख्वाजा की दरगाह की मस्जिद, (xii) मेड़ता की मस्जिद, (xiii) आमेर की मस्जिद ।